स्कन्दपुराण में धनुर्वेद का सूक्ष्म विवेचन

वन्दना सिंह
शोधच्छात्रा
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

धनुर्वेद का स्कन्दपुराण में विस्तार से वर्णन किया गया है–धनुर्वेद के चार पाद हैं; रथ, हाथी, घोड़े और प्रमुख योद्धागण। स्थान के भेद से प्रत्येक के पाँच प्रकार होते हैं–पहला है मन्त्रमुक्त, दूसरा करमुक्त, तीसरा मुक्तिसंधारित, चौथा अमुक्त और पाँचवाँ सर्वसम्मत बाहुयुद्ध कहा गया है। उसमें भी शास्त्र–सम्पत्ति और अस्त्र–सम्पत्ति के भेद से युद्ध दो प्रकार का बताया गया है। ऋजुयुद्ध और मायायुद्ध के भेद से उनके पुनः दो भेद हो जाते हैं। क्षेपणीय आदि जो मंत्र द्वारा फेंका जाय उसे 'मन्त्रमुक्त' कहते हैं। शक्ति अस्त्र, तोमर यन्त्र और प्रस्तर खण्ड आदि को 'करमुक्त' कहा गया है। भाला आदि जो अस्त्र शत्रु पर छोड़ा जाय फिर उसे हाथ में ले लिया जाय, उसे मुक्तसंधारित समझना चाहिए। खड्ग को 'अमुक्त' कहते हैं और जिसमें अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग न करके मल्लों की भाँति लड़ा जाय उस युद्ध को 'बाहुयुक्त' कहते हैं।

अंगुष्ठ, गुल्फ, पार्षिभाग और पैर ये एक साथ रहकर परस्पर सटे हुए हों तो पृथक् लक्षण के अनुसार इसे 'समपद' नामक स्थान कहते हैं। दोनों पैर बाह्य अँगुलियों के बल पर स्थित हों, दोनों घुटने स्तब्ध हों तथा दोनों पैरों के बीच का फासला डेढ़ हाथ हो तो 'विशिष' नामक स्थान कहलाता है। जिसमें दोनों घुटने हंस–पंक्ति के आकार की भाँति दिखायी देते हों और दोनों में दो हाथ अन्तर हो तो वह मण्डल स्थान माना गया है। जिसमें दाहिनी जाँघ और घुटना हल के आकार में स्थित हो और दोनों पैरों के बीच का मान ढाई हाथ का हो, उसे 'आलीढ़' नामक स्थान कहा गया है। इसके विपरीत 'प्रत्यालीढ़' नामक स्थान है।

जहाँ बायाँ पैर टेढ़ा और दाहिना सीधा हो तथा दोनों गुल्फ और पर्ष्णिभाग पाँच अंगुल के अन्तर पर स्थित हों तो वह बारह अंगुल बड़ा 'स्थानक' कहा गया है। यदि बायें पैर का घुटना सीधा हो और दाहिना पैर भली–भाँति फैलाया गया हो अथवा दाहिना घुटना कब्जाकार और दोनों पैर दण्डाकार विशाल दिखायी दें तो उसे 'विकट' नामक स्थान कहा गया है। इसमें दोनों पैरों का अन्तर दो हाथ बड़ा होता है। जिसमें दोनों घुटने दोहरे और दोनों पैर उत्तान हो जायँ, इस विधान के योग से जो स्थान बनता है, उसका नाम 'सम्पुटक' है। जहाँ कुछ घूमे हुए दोनों पैर समभाव से दण्ड के समान विशाल दिखायी दें वहाँ विस्तार से सोलह अँगुलियों का न्यास कहा गया है। योद्धा को चाहिए कि पहले बायें हाथ से धनुष और दायें हाथ से बाण उठाकर चलायें और उन छोड़े हुए बाणों को स्वस्तिकाकार करके गुरुजनों को प्रणाम करें।

धनुष का प्रेमी योद्धा वैशाखी स्थान के सिद्ध हो जाने पर उत्थित वा स्थित होकर धनुष की निचली कोटि और बाण के फलदेश को धरती पर टिकाकर रखें और उसी अवस्था में मुड़ी हुई दोनों भुजाओं और कलाइयों द्वारा नापें। बाण से धनुष सर्वथा बड़ा होना चाहिए और बाण के पुंख तथा धनुष के डण्डे में बारह अंगुल का अन्तर होना चाहिए। धनुर्दण्ड को प्रत्यंचा से संयुक्त कर देना चाहिए। यह अधिक छोटा या बड़ा नहीं होना चाहिए। धनुष का नाभिस्थान में और बाण सहित एक हाथ को कण्ठ में लगाकर दूसरे हाथ को आँख और कान के

बीच में कर लें तथा उस अवस्था में बाण को फेंके। पहले बाण को मुट्ठी में पकड़ें और उसे दाहिने स्तनाग्र की सीध में रखें। तदनन्तर उसे प्रत्यंचा पर ले जाकर उस प्रत्यंचा को खींचकर पूर्ण रूप से फैलाएँ, प्रत्यंचा न तो भीतर हो न बाहर, न ऊँची हो न नीची, न कुबड़ी हो न उत्तान और न अत्यन्त आवेष्टित। वह समस्थिरता से मुक्त और दण्ड की भाँति सीधी होनी चाहिए। दृढ़ता से खींचनेवाली मुष्टि के द्वारा लक्ष्य को आच्छादित करके बाण को छोड़ना चाहिए। योद्धा को घुटनों और जंघों के बल यत्नपूर्वक इस प्रकार खड़ा होना चाहिए कि शरीर त्रिकोणाकर जान पड़े। कन्धा ढीला, ग्रीवा निश्चल और मस्तक मयूर की भाँति शोभित हो। ललाट, नासिका, मुख, बाहुमूल और कोहनी ये सम अवस्था रहें। कन्धे तथा हाथ में तीन अंगुल का अन्तर समझना चाहिए। पहली बार तीन अंगुल, दूसरी बार दो अंगुल और तीसरी बार एक अंगुल का अन्तर बताया गया है। बाण को पुंख की ओर से तर्जनी एवं अँगूठे से पकड़ें। फिर मध्यमा एवं अनामिका से भी पकड़ लें और तब तक वेगपूर्वक खींचते रहें, जब तक पूरा बाण धनुष पर न आ जाय। ऐसा उपक्रम करके विधिपूर्वक बाण को छोड़ना चाहिए। दृष्टि और मुष्टि से आहत हुए लक्ष्य को बाण से शीघ्र विदीर्ण करें। बाण को छोड़कर पिछला हाथ वेग से पीठ की ओर ले जायें क्योंकि यह प्रभेदक काटनेवाला कहा गया है। अतः उस बाण को धनुष से खींचकर कोहनी के नीचे कर लें और छोड़ते समय ऊपर करें। कोहनी का पक्ष से सटाना मध्यम श्रेणी का बचाव है। शत्रु के लक्ष्य से दूर रखना उत्तम है। उत्तम श्रेणी का बाण बारह मुष्टियों के माप का होना चाहिए। ग्यारह मुष्टियों का मध्यम और दस मुष्टियों का कनिष्ठ माना गया है। बाण के ये तीन भेद हैं। धनुष भी तीन प्रकार का कहा गया है।

धनुष चार हाथ लम्बा हो तो उत्तम कहा गया है। साढ़े तीन हाथ का हो तो मध्यम और तीन हाथ का हो तो कनिष्ठ कहा गया है। रथ, घोड़े, हाथी, ऊँट और पैदल योद्धा पर इस प्रकार के धनुष का प्रयोग कहा गया है। उसके बाद धनुष का संस्कार करें। द्विज को चाहिए कि 1200 बार धनुष को सूर्य की ओर करे फिर सात बार धनुष को धो डाले तत्पश्चात् यज्ञ भूमि विधान जानने वाला व्यक्ति बाणों का संग्रह करके कवच धार के लिए एकाग्रचित्त हो, तूणीर ले, उसे पीठ की ओर दाहिनी काँख के पास दृढ़ता से बाँधे। धनुष विलक्षण होने पर भी उसमें देवता को स्थापित करे। फिर दाहिने हाथ से तूणीर के भीतर से बाण को निकाले उसी के साथ मध्यम भाग में बाण का सन्धान करे, फिर सिंहकल्प नामक मुष्टि द्वारा डोरी को पुंख के साथ ही दृढ़तापूर्वक दबाकर समभाव से संधान करे, फिर प्रत्यंचा पर बाण को इस प्रकार रखे कि खींचने पर उसका फल या पंखु बायीं काँख के समीप आ जाय। उस समय बाण को बायें हाथ की मध्यमा अँगुली से भी धारण किये रहे। विधि को जानने वाला पुरुष मुष्टि के द्वारा लक्ष्य को ही वैसा करके बाण को शरीर के दाहिने भाग की ओर रखते हुए लक्ष्य की ओर छोड़े। धनुष का दण्ड इतना बड़ा हो कि भूमि पर खड़ा करने पर उसकी ऊँचाई ललाट तक आ जाय। उस पर लक्ष्य बेध के लिए सोलह अंगुल लम्बे चन्द्रक का सन्धान करे और उसे भली–भाँति खींचकर लक्ष्य पर प्रहार करे। फिर तत्काल ही तूणीर से अगुष्ठ एवं तर्जनी अँगुली द्वारा बार–बार बाण निकाले, चलावे, चारों ओर तथा दक्षिण की ओर लक्ष्यवेध का क्रम जारी रखे।

योद्धा पहले से ही चारों ओर बाण मारकर सब ओर के लक्ष्य को वेधने का अभ्यास करे तदनन्तर वह तीक्ष्ण परावृत्त, गत, निम्न, उन्नत तथा क्षिप्रवेध का अभ्यास बढ़ावे मध्यस्थान में तथा उपर्युक्त स्थानों में सत्त्व का पुट देते हुए विचित्र एवं दुस्तर रीति से सैकड़ों बार हाथ से बाणों के निकालने एवं छोड़ने की क्रिया द्वारा धनुष का तर्जन करे; उस पर टंकार दे। उक्त वेध्य के अनेक भेद हैं। पहले तो दृढ़, दुष्कर तथा चित्रदुष्कर ये वेध्य के तीन भेद हैं। ये तीन ही भेद दो–दो प्रकार के होते हैं। अन्तरस और तीक्ष्ण ये 'दृढ़वेध्य' के दो भेद कहे गये हैं। अब अस्त्र का वर्णन इस प्रकार है पहला ब्रह्मास्त्र कहा गया है, दूसरा ब्रह्मदण्ड, तीसरा ब्रह्मशिर, चौथा

पाशुपत, पाँचवाँ वायव्यास्त्र, छठा आग्नेयास्त्र और सातवाँ नारसिंह। इनके भेद अनन्त हैं। वेदमाता गायत्री से सब शास्त्रों को ग्रहण अथवा क्षेपण करना चाहिए।

1. ब्रह्मास्त्र

विद्वान् व्यक्ति 'द' को आदि में और 'द' को अन्त में जोड़कर विपरीत सावित्री को जपे। पहले एक निखर्व विधि से जपकर पुनः बाण को मंत्रित करके शत्रु पर फेंके। ऐसा करने से सकल शत्रु, सभी जातियाँ नष्ट हो जाती हैं। बालक, वृद्ध, गर्भ स्थित तथा जो कोई युद्ध करने को आये हों वे बस शिव कृपा से नष्ट हो जाते हैं। क्रमानुसार 'द' आदि में और 'द' अन्त में जोड़कर संहार की सिद्धि के लिए सावित्री का जप करें।[1] बह्मदण्ड पहले प्रणव (ऊँ) का उच्चारण करें। तब 'प्रचोदयात्' तब 'नो यो धियः' क्रम से, तब 'धीमहि देवस्य', तब 'भर्गो वरेणयम्' जोड़े। तब सवितुः पद जोड़कर 'मम शत्रून् हन हन हुं फट्–फट्' दो लाख जपकर बाण को अभिमंत्रित करके शत्रुओं पर शीघ्र फेंके। ऐसा करने से सभी शत्रु यम तुल्य होने पर भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं इसी को संहार सिद्धि के लिए उलटा जपना चाहिए।

2. ब्रह्मशिर

पहले प्रणव का उच्चारण करें पश्चात् 'धियो यो नः प्रचोदयात् भर्गो देवस्य धीमहि' तत्सवितुर्वरेण्यम् शत्रून्मे हन हन हुं फट्' जोड़ना चाहिए। तब ब्रह्मशिर को फेंके पहले नियम और पवित्र होकर उक्त मंत्र का तीन लाख पुरश्चरण करें। ऐसा करने से सभी शत्रु देवता और असुर भी नष्ट हो जाते हैं; संहार में इसी मंत्र को उलटा जपना चाहिए।

3. पाशुपत

पाशुपत शस्त्र को विशेष रूप से जान लेने पर भी सभी शत्रु विनष्ट हो जाते हैं। 'द' को आदि में और 'द' को अंत में जोड़कर प्रणव सहित सावित्रीमंत्र का उच्चारण करके श्लीं पशु हुं फट् अमुकशत्रून् हन हन हूँ फट् को पहले दो लाख जपकर पाशुपतास्त्र फेंके। पुनः संहार में उसी को उल्टा करके जपें। यह पाशुपतास्त्र सभी शत्रुओं का निवारण करने वाला है।

4. वायव्य शस्त्र

ओं वायव्यया रायौर्वाया अमुक् शत्रून् हन हन हुं फट् इस मंत्र को पहले दो लाख जपकर फिर संहर रूप संहार करें। यह वायव्य अस्त्र देवताओं को भी हटा देता है।

5. आग्नेयास्त्र

यह शत्रु को भय देता है। 'ओं अग्निस्त्यता ऋदुभूंच शिवं वनाश्वाविणि ऋगादुति दसकपनः सद्वेति' मंत्र पढ़कर शत्रु का नाम जोड़ें, दो लाख मंत्र जपें। फिर शस्त्र पर योजना करें या अस्त्र चलावें। फिर संहार के लिए उल्टा जपें।

6. नारसिंह

ओं वज्रनख दंट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् मंत्र को एक लाख जपकर नृसिंह भगवान् का ध्यान करके योजना करें। ऐसा करने से सिंह रूप बाण शत्रु सेना पर टूट पड़ते हैं। उल्टा जपकर इसका संहार करें।

यह अत्यन्त पुण्य देने वाला धनुर्वेद है। धनुर्वेद जानने वाले के वे शत्रु भी नष्ट हो जाते हैं, जो उनको आँख दिखाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्कन्दपुराण केदारखण्ड 126.1–76।